#८५: कार्य शुद्धि

०१-०७-२०१३

कार्य का स्वरूप उत्पादन कार्य में देखा जाता है| उत्पादन सामान्याकांक्षा, महत्वाकांक्षा के रूप में होता है | सामान्याकंक्षा–आहार, आवास, अलंकार के रूप में पाया जाता है, जो सबको जरूरत पड़ता है| इसको सामान्याकाँक्षा नाम दिया है| महत्वाकाँक्षा- दूरश्रवण, दूरगमन, दूरदर्शन रूप में होता है| इसे महत्वाकाँक्षा नाम दिया है| नाम देने का अधिकार ज्ञानावस्था के मानव के पास है ही| इसी आधार पर अभी तक मानव अपने सन्तान का नाम कुछ न कुछ देने का प्रयत्न किया है| आगे भी देता रहेगा| यही अधिकार है| अधिकार ज्ञानात्मक, कार्यात्मक दो भाग में होता है| कार्यात्मक भाग को सीखते हैं| ज्ञानात्मक भाग को समझते हैं| समझ के जो ज्ञान होता है उसे ज्ञानात्मक कहते हैं| इस प्रकार से मानव दोनों प्रकार से ज्ञान सम्पन्न होना ही ज्ञान का मतलब है| कार्यात्मक ज्ञान जो सीखा हुआ होता है उससे शरीर की आवश्यकता पूरी होती है | ज्ञानात्मक कार्य जीवन की आवश्यकता को पूरा करता है | जीवन की आवश्यकता न्याय, समाधान, सत्य है| न्यायात्मक प्रमाण व्यवहार रूप में होता है| धर्मात्मक प्रमाण विचार प्रधान रूप में होता है| सत्यात्मक प्रमाण अनुभव के आधार पर होता है | यही चेतना त्रय अध्ययन विधि की महिमा है| अनुभव प्रमाण को सह-अस्तित्व में अनुभव होना बताया गया है |

यह विकल्प विधि से बताया गया है| विकल्प का मतलब आदर्शवाद, भौतिकवाद का विकल्प क्योंकि आदर्शवाद रहस्यवाद में फंसने से न्याय, समाधान, सत्य समझ में नहीं आया| रहस्य में मनमानी होता ही है| इसी प्रकार भौतिकवादी विधि से अपराध और भ्रम में फंस गये| अपराध और भ्रम मानव परम्परा के लिये दुःखकारी है, द्वेषईर्ष्याकारी है, संघर्षकारी है| इस प्रकार से देखा गया है, समझा गया है तभी विकल्प को लिखा गया है| न्याय, समाधान, सत्य प्रमाणित होना ही विकल्प है| प्रमाणित होने का मतलब आचरण में आना है| मानव परम्परा में ही यह आचरण के रूप में प्रमाणित होता है| जीव परम्परा में नहीं होता, वनस्पति परम्परा में नहीं होता, पदार्थ परम्परा में नहीं होता| इस आधार पर विकल्प को लिखा है| संयोग से अभी के हमारे संपर्क में आये मानव में कुछ प्रतिशत विकल्प चाहते हैं | बोलने के पक्ष में सर्वाधिक हैं, जीने के पक्ष में न्यूनतम | अर्थात पढ़ा हुआ, सोचा हुआ, सुना हुआ के स्मरण को दोहराने में अधिकांश है, नियम अनुसार स्वयं जीने में कम हैं |

इस क्रम में मानव प्रमाण के रूप में प्रस्तुत होने के लिये प्रतिबद्धता आवश्यक है , स्पष्टता आवश्यक है| स्पष्टता परम्परा देता है | प्रतिबद्धता हर मानव सन्तान करता है| प्रतिबद्धता हर मानव सन्तान का अधिकार है| इस विधि से मानव परम्परा बनता है| प्रतिबद्धता, प्रेरणा है| प्रेरणा परम्परा में होने के अर्थ में सम्पूर्णता को प्रदान करने का विधि से विकल्प प्रस्तुत है | इस विकल्प से अर्थोपार्जन का कोई बात स्पष्ट नहीं है, ऐसा व्यवस्था दिया है| रहने के लिये, प्रकाश के लिये, पानी के लिये प्रावधानित है| मानव घर में खाता है, वहीं खाने की बात कहा है| यह बात रायपुर के पास अछोटी में दिया है, छोटी सी स्वरूप में| वृहद रूप में प्रस्तुत किया है शिक्षा में| शिक्षा विधि से छतीसगढ़ में हजारों लोगों के कान में पड़ा है| जीने के रूप में,सम्भावना के रूप में अब है ही, प्रमाण के रूप में नहीं है| इन शिक्षकों को सम्बोधित करने वालों में से प्रमाण के रूप में प्रमाणित होने का सम्भावना अधिक हुआ| इस समय में मेरा आयु अर्थात विकल्प को प्रस्तुत किया हुआ आदमी का आयु ९३ वर्ष हो चुका है| ९४ वें वर्ष में जी रहे हैं| अभी भी मूल व्यक्ति का आयु ९३ वर्ष होते हुये पूरी बात को जागृति सहज रूप में बोध कराते हैं | ये

आवश्यकता जब तक है तब तक जीने का भी सम्भावना है | प्रमाणित व्यक्तियों का संख्या बढने का आवश्यकता है | उसका प्रयास पुरजोर होता जा रहा है | तीन-चार लोग प्रमाणित होने के लिये प्रयत्नशील हैं | कुछ लोग इस वस्तु को बदलने में तुले हैं | यह सब प्रयत्न काले दीवाल के सामने ही आएगा | अनुभव ज्ञान को बदलने का कोई प्रावधान अस्तित्व में नहीं है | यह आप्त वाक्य है | दूसरी ओर शनैः शनैः प्रमाणित व्यक्ति का संख्या बढने से मूल व्यक्ति (उद्गाता) का अपने में आश्वस्त होना स्वाभाविक है | इस प्रकार से विकल्प का प्रयोजन, अनेक व्यक्तियों में प्रमाणित होने का सम्भावना उदय हो चुका है |

हिंदी जगत का सम्भावना बढ़ गयी है | इन अंशों के मूल में लेख जो लिखा है, हिंदी में लिखा है | अभी अंतर्राष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी में प्रस्तुत होने का कार्य दो तीन लोग प्रयत्न कर रहे हैं | राकश गुप्ता अंग्रेजी में कहने में प्रवृत्त हैं | श्रीराम नरसिम्हन को हमने इसे कार्य को करने को कहा है | जो सही है, लोगों को ग्राह्य है, वो प्रभावशील रहेगा | समझे बिना इसे दुसरे भाषा में कहना बनता नहीं | शुरुआत में भाषांतरण होगा | उसके बाद दुसरे भाषा में समझा पाएंगे | हर भाषा में ऐसा ही होगा | अंग्रेजी मूल व्यक्ति (मैं) नहीं जानते हैं | हमारा मातृ भाषा कन्नड़ रहा | घर-परिवार में हम संकेति बोलते रहे, संकेति एक बोली है – इसमें तमिल, कन्नड़ और कुछ मलयालम मिश्रित है | हमारे परिवार जन ६०० वर्ष पूर्व शिव कांची एक जगह – तमिल प्रदेश में, वहां से हस्सन जिल्ला, मुगडी रास्ता, रामनाथपूरा के पास, ग्राम अग्रहार, कर्नाटक प्रांत में आकर बस गए | हमारा बचपन और युवा अवस्था अग्रहार और मैसूरू के बीच निकला | हमने इस दर्शन को यहाँ –मध्य प्रदेश, जो हमारा साधना स्थली रहा, के अमरकंटक के स्थानीय भाषा हिंदी में व्यक्त किया | संस्कृति में हम पहले से विद्वान रहे | हर भाषा में इस वस्तु को कहा जा सकता है | इस पर विश्वास रखते हैं | इस क्रम में चलता हुआ विकल्प अंतर्राष्ट्रीय होता जा रहा है | विकल्प पूरा हिंदी में ही है क्योंकि हिन्दी जगत में अभ्यास हुआ है | भाषा के अर्थ में इसका मूल प्रणेता ने सोचा कि कौन सा भाषा में लिखें ? मूल प्रणेता का भाषा कन्नड़ भाषा, यह प्रांतीय भाषा है | हिन्दी कम से कम चार, म.प्र. भारत में पाँच प्रांतीय भाषा है | दूसरा इसका कारण था जहाँ अनुसंधान हुआ है वहाँ के लोगों को समझाना है कि नहीं , इस आधार पर हिन्दी में इस दर्शन को लिख दिया |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- **ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)**